# मैथिली / MAITHILI

## पेपर II / Paper II

## साहित्य / LITERATURE

| | |
|---|---|
| *निर्धारित समय : तीन घंटे* | *अधिकतम अंक :* **250** |
| *Time Allowed :* ***Three*** *Hours* | *Maximum Marks :* **250** |

---

**प्रश्न-पत्र स्पष्ट निर्देश**

***प्रश्नक उत्तर लिखबाक पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशकेँ सावधानीपूर्वक पढ़ि लियऽ :***

*एतय दू* ***खण्ड (SECTION)*** *मे विभक्त कुल* ***आठ*** *प्रश्न अछि ।*

*अभ्यर्थी कुल* ***पाँच*** *प्रश्नक उत्तर देथि ।*

*प्रश्न संख्या* ***1*** *तथा प्रश्न संख्या* ***5*** *अनिवार्य अछि । शेष प्रश्नमेसँ कोनो* ***तीन*** *प्रश्नक उत्तर लिखू, जाहिमे प्रत्येक खण्ड* ***(SECTION)*** *सँ कमसँ कम* ***एक*** *प्रश्नक चयन आवश्यक अछि ।*

*प्रश्न / खण्डक निर्धारित अंक ओकरा समक्ष निर्दिष्ट कयल गेल अछि ।*

*उत्तर* ***मैथिली*** *(देवनागरी लिपि) मे लिखब अनिवार्य अछि ।*

*जतय निर्दिष्ट हो, शब्द-सीमाक अनुपालन अपेक्षित अछि ।*

*उत्तरित प्रश्नक गणना क्रमानुसार कयल जायत । यदि काटल नहि गेल हो तँ अंशतः लिखित उत्तरक गणना सेहो कयल जायत । प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकाक कोनो रिक्त पृष्ठ अथवा कोनो पृष्ठक रिक्त भागकेँ अवश्य काटि दी ।*

**Question Paper Specific Instructions**

***Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :***

*There are* ***EIGHT*** *questions divided in* ***TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt* ***FIVE*** *questions in all.*

*Questions no.* ***1*** *and* ***5*** *are compulsory and out of the remaining, any* ***THREE*** *are to be attempted choosing at least* ***ONE*** *question from each section.*

*The number of marks carried by a question / part is indicated against it.*

*Answers must be written in* ***MAITHILI*** *(Devanagari script).*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.*

---

## SECTION A

**Q1.** **प्रत्येक प्रश्न अनिवार्य अछि । काव्य-वैशिष्ट्यकैं निर्दिष्ट करैत निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए । (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य)** *10×5=50*

(a) काजर-तिमिर-भरमे जसु तन-रुचि, निबसय कुंज-कुटीर ।
बंसि-निसास मधुर विष उगिरए, गति अति कुटिल सुधीर ।।
सजनी, कान्ह से बरजु भुजङ्ग ।
से मोर हृदय-चन्दन-रुह लागल भागल धरम-विहङ्ग ।।
लोचन-कोर पडैते नव नागरि रहए न पारए धीर ।
कुंचित अरून अधर भरि पीबए कुलवति-बरत-समीर ।। *10*

(b) अगमने प्रेम गमने कुल जाएत
चिन्ता पङ्क लागलि करिणी
मञे अबला दह दिस ममि झाखञो
जनिव्याध डरे भीरु हरिणी ।।
चन्दा दुरजन गमन विरोधक
उगल गगन भरि बैरि मोरा ।।
कुहु भरमे पथ पद आरोपल
आए तुलाएल पञ्चदशी । *10*

(c) देखि ककरहु पंकमग्न, सकीतँ उबारि दिऔ
कूपमे खसइतकैं अपन बाँहि पकड़ाए दिऔ,
किन्तु कए काज ई बिसरि जाउ, बिसरि जाउ,
स्मृतिसँ मेटाए लिअ;
अन्यथा होएत तीव्र अनुताप ।
गिरह बान्हि राखू, जे एतादृश लगानी करब
सूदिक कथा कोन मूरहुसँ हाथ धोउ । *10*

(d) कविक कर्म थिक शशिकर-शीकर रसिक चकोरक प्राण ।
दोषाकर बुझि मुद्रित दृग से पंकज स्वयं न आन ।।
कविक कर्म थिक दिनकर किरणे जगतक दृग-आलोक ।
आतप वारण करथि छत्र धर अपनहि छाँयालोक ।।
स्वातिक विन्दु पड़य शुक्तिक मुख मुक्ता झलकय अंग ।
फणिक वदन कण पड़इछ, भरइछ दुर्वह गरल तरंग ।। *10*

(e) झमाझम बरसैत मूसलधार,
माघक ठार, चैतक तस;
सभ फूसि ओकरा हेतु ।
लगाबथु ग केओ कतेकों जोर
बाप पित्तीकेँ करथु ग सोर
मुदा रोइयाँ एकोटा ओकर
उपाड़ल नहि हेतन्हि ककरो बुतें । 10

**Q2.** (a) लालदासक रमेश्वरचरित मिथिला रामायणक बालकाण्डमे मिथिलाक विलक्षण संस्कृतिक मार्मिक चित्रण भेल अछि — युक्तियुक्त प्रतिपादन करू । 20

(b) "एहि प्रबुद्धयुगमे कोन प्रकारक कवि चाही ? एहि प्रश्नक उत्तर यात्रीक चित्रामे संकलित कवितासभ दैत अछि" — एहि कथनक समीक्षा करू । 15

(c) मैथिलीक नव्यतम काव्य-चेतनाक कवि लोकनिक कविताक संग्रह 'समकालीन मैथिली कविता'मे कयल गेल अछि — सयुक्ति विवेचन करू । 15

**Q3.** (a) "मैथिलीमे नव काव्य-परम्पराक प्रवर्त्तक मनबोध कृष्णाजन्ममे सर्वत्र ठेठ शब्दक ठाठ बान्हि लोकोक्ति समक सटीक प्रयोग कय भाव एवं भाषा दुनूकेँ अत्यन्त हृदयग्राही एवं प्रभावपूर्ण बना देने छथि" — एहि उक्ति पर विचार करू । 20

(b) 'मिथिला भाषा रामायण'मे सुन्दरकाण्डक नामकरण पर विचार करैत कवीश्वर चन्दा झाक वर्णन-कौशल पर प्रकाश दिअ । 15

(c) " 'कीचक बध'मे प्राच्य एवं पाश्चात्य शैलीक मर्मस्पर्शी समन्वय भेल अछि" — एहि तर्कक मूल्यांकन करू । 15

**Q4.** (a) "भावक कोमलता, शब्दक लालित्य, लय एवं तुकक कौशल, स्वरक माधुर्य एवं बिम्बक चमत्कार विद्यापति पदावलीक मुख्य विशेषता अछि" — पठित अंशक आधार पर एहि कथनक समीक्षा करू । 20

(b) "पदकेँ ललित श्रुतिमधुर, अर्थानुग्राही एवं समतासंयुक्त बनएबामे यदि शब्दकेँ तोड़हु पड़लैन्हि, ओकर स्वरूप विकृतो करए पडलैन्हि तथा अपन हृद्यक भाव झाँपलो भए गेलैन्हि तथापि गोविन्ददास अर्थक प्रसादक हेतु शब्दविन्यास नहि दूरि कएलन्हि" — एहि उक्तिक आलोकमे पठित अंशक आधार पर गोविन्ददासक काव्य-प्रतिभाक विवेचन करू । 15

(c) 'दत्तवती'क द्वितीय सर्गमे वर्णित गुरुकुलक शिक्षण-व्यवस्था एवं आकर्षक वातावरण विश्वशान्तिक अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूपक चित्र प्रस्तुत करैत अछि — सयुक्ति प्रतिपादन करू । 15

## SECTION B

**Q5.** **निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू जाहिमे भाव स्पष्ट रहए । (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य)** ***10×5=50***

(a) सरिपहुँ... बागमती, कमला, बलान, गण्डक आ खास क'क' कोसीतँ अपराजिता अछि ने ! ककरहु सामर्थ नहि जे एकरा पराजित क' सकय । सरकार आओत... चलि जायत... मिनिस्टरी बनत आ टूटत-मुदा ई कोसी... ई बागमती... ई कमला आ बलान... अपन एही प्रलयंकारीगतिमे गामकेँ भसिअवैत, हरिअर-हरिअर खेतकेँ उज्जर करैत, माल-जालकेँ नाश करैत, घर-द्वारक सत्यानाश करैत बहैत रहत आ बहैत रहत । *10*

(b) कोन काज हमरा बुतेँ हयत ? भीख माङब ? भिखमंगोकेँ तँ लोक झझकारिते छै । अहलादि कड बैसबै कहाँ छै । आ भीख की दै छै तँ एकटा पाइ । एक मुट्ठी अन्न ! ई कने बजैएतँ भरि पेट आगरह कड कड खुअबैए । कतेने सिनेह करैए । बीस गोटेक द्वारि घूमब । बीस गोटेक बात सुनब, तँ बीसटा पाइ होयत । घूरि जाइ सेहे नीक । मुदा जँ मौगी देखि लिए ई काँख महँक मोटरी ? *10*

(c) घामक टघार कपारसँ नाकक नोक दड चुबै ! भरल-चढल छाती पर घाम टघरि-टघरि चापत पेट पर बहि डाँडक धोतीमे सुखैल चलि जाइक । मोन एकदम महुरा गेल रहैक । मुँह लाल-स्याह मुदा आँखि ओहिना निश्चल आ स्थिर रहैक । जतेक गैद तबतैक, जतेक घाममे नहाजायत, जतेक मोन माहुर हेतइ, ततेक आर मस्त भय हडर जोतत । अपन घामओ गैदक माहुरमे मगन भय टिटकारलक छोट-छोट बड़दक जोरीकेँ । *10*

(d) सैह काल त हमरा सभक काल भउ गेल । आइ मासान्त, काल्हि संक्रान्ति, परसू भदवा । एकटा टाट बान्हक हो त नौ दिन पतड़ा देखैत बैसल रहू । औ, संसारक और कोनो देश भदवा मानैत अछि ? भद्रा महारानीमे वास्तविक सामर्थ्य छैन्ह त ओकरासभकेँ किऐक नहिं धरैत छथिन्ह ? पृथ्वी पर और-और लोककेँ दिक्शूल किऐक नहि लगैत छैक ? यूरोप, अमेरिका बलाकेँ अधपहरा किऐक नहि घरैत छैक ? सभसँ बुड़िबक दीनानाथ हमरे लोकनि छी ? *10*

(e) सुकर्म आ अपकर्म ककरा कहै छै से बुझबाक बुद्धि जँ अहाँमे रहैत तँ आइ अहाँकेँ हमरासँ वा हमर ऐ स्टालसँ घृणा नै होइत । एके टोकारा पर अहाँ लगले हमरा लग दौडल अबितौं... पुछितौं जे हमर व्यवसाय घाटामे चलि रहल अछि कि नफामे । अहाँ से कयलौं नै आ तेँ हम कहब जे अहाँ ने केवल समाजक, ने केवल आश्रमक वा परिवारक, अपितु अहाँ अपनो लेल भारेटा छी । *10*

**Q6.** (a) खट्टर ककाक विनोदपूर्ण विचार-लहरी मिथिलाक संस्कृति ओ पुरातन सभ्यता पर मार्मिक व्यंग्यक प्रहार कयने अछि — एहि कथन पर विचार करू । 20

(b) 'लोरिक विजय' उपन्यासक कथावस्तुक मार्मिकता पर प्रकाश दिअ । 15

(c) 'पृथ्वीपुत्र' उपन्यासमे जीवनक ओ चित्र उतरल अछि जे सत्य पर आधारित अछि — एहि उक्तिक समीक्षा करू । 15

**Q7.** (a) मैथिली गद्यक विकासमे 'वर्णरत्नाकर'क स्थान निरूपित करैत ओकर नामकरण पर विचार करू । 20

(b) कोनो कथाक संगति-विसंगति कथाक नहि, ओहि समाजक रहैछ जाहिमे ओ कथाकार रहैत अछि — 'कृति राजकमलक'मे पठित प्रथम दस कथाक आधार पर एहि उक्तिक समीक्षा करू । 15

(c) आधुनिक मैथिली कथामे वर्त्तमान समाजक चित्र अंकित रहैत अछि — 'कथासंग्रह'मे पठित कथाक आधार पर एहि कथनक औचित्य पर प्रकाश दिअ । 15

**Q8.** (a) मैथिलीमे लोकगाथात्मक उपन्यासक क्षेत्रमे मणिपद्मक 'लोरिक विजय'क महत्त्व निरूपित करू । 20

(b) "जखन बैसल बेटा मायो-बापकेँ नै सोहाइत छैक, आन किए ककरो गरा लगोतैक ।" — भफाइत चाहक जिनगी'मे महेशक एहि उक्तिमे सन्निहित व्यंग्यक समीक्षा करू । 15

(c) 'वर्णरत्नाकर'क वर्णनक चमत्कार पर प्रकाश दिअ । 15